11/7/2020

श्लोकसंख्या-14

"मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत॥"

हिन्दीअनुवाद-

हे कौन्तेय (कुन्तीपुत्र अर्जुन)! मात्रा (इन्द्रियाँ) तथा स्पर्श (शब्दादि विषय) शीत-उष्ण (ठंड-गर्म), सुख-दुःख आदि परस्पर विरोधी पदार्थों को अनुभूत करनेवाले होते हैं। ये द्वन्द्व जन्ममरणशील होने के कारण अनित्य (नश्वर/अस्थायी/भंगुर/असत्य) हैं। अतएव हे भरतवंशी अर्जुन! तुम इन परस्पर विरोधी पदार्थों (द्वन्द्वों) को सहन करो।

भावार्थ (व्याख्या) -

(क) ज्ञानेन्द्रियों द्वारा शब्द आदि (स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध) इन विषयों को जानाजाता है। इन ज्ञानेन्द्रियों को मात्रा शब्द द्वारा अभिव्यक्त कियाजाता है।

मात्रा - व्युत्पत्ति - "मीयन्ते आभिः शब्दादय"

शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध इन विषयों के साथ ज्ञानेन्द्रियों के होने वाले संयोग को मात्रास्पर्श कहाजाता है। इन मात्रास्पर्शों के द्वारा शीत-उष्ण, सुख-दुख आदि आपस में विपरीत पदार्थों की प्राप्ति होती है।

ज्ञानेन्द्रियों (श्रोत्र आदि) के साथ विषयों का संयोग शीत-उष्ण, मृदु-कठोर आदि के रूप में सुख-दुःख को उत्पन्न करनेवाला होता है। ये आगमपायी (जन्ममरणशील) तथा अस्थायी (अनित्य) हैं। इन विषयों तथा इन्द्रियों के संयोग को तुम सहो। अतएव तुम्हें इनसबों को (अर्जुन) यानि युद्धादि कर्मों को सहन करने में समर्थ बनना चाहिए।